CHAPTER 7

(क) भरत - राम का प्रेम

(ख) पद

PAGE 45, प्रश्न और अभ्यास

भरत - राम का प्रेम

12:1:7:प्रश्न और अभ्यास:1

'हारेंहु खेल जितावहिं मोही' भरत के इस कथन का क्या आशय है?

उत्तर - प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से तुलसीदास जी ने श्रीराम चंद्र और भरत के सकरात्मक चरित्र को प्रस्तुत करते है। तुलसीदास जी कहते है की खेल के मैदान में श्रीराम जी अपने भाई भरत को हमेशा जीतने देते है क्योँकि वह नहीं चाहते है की भरत किसी भी प्रकार का कष्ट उठाये। भारत अपने भाई श्रीराम चंद्र जी की प्रशंसा करते हुए कहते है की श्रीराम जी बहोत दयालु और स्नेह रखने वाले है। इस प्रकार दोनों भाई एक दूसरे के लिए सकारात्मक विचार रखते है। जिस से दोनों के बीच असीम प्रेम और श्रद्धा है।

12:1:7:प्रश्न और अभ्यास:2

'मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ' में राम के स्वभाव की किन विशेषताओं की ओर संकेत किया गया है?

उत्तर - प्रस्तुत पंक्ति में श्री राम के इन विशेषताओं के बारे में पता चलता है :

(क) श्रीराम बहुत दयालु और स्नेही हैं। उन्होंने बचपन से ही भरत पर स्नेह और कृपा बरसाई है।

(ख) भरत श्रीराम के प्रिय अनुज थे। उन्होंने हमेशा भरत के हित के लिए काम किया है।

(ग) श्रीराम खेल में भी अपने प्रिय भरत के प्रति कभी नाराजगी नहीं दिखाता था। वह हमेशा उसे खुश रखने की कोशिश करता था।

(घ) श्रीराम ने अपराधियों पर भी कभी क्रोध नहीं किया।

12:1:7:प्रश्न और अभ्यास:3

राम के प्रति अपने श्रद्धाभाव को भरत किस प्रकार प्रकट करते हैं, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - भरत जी अपने बड़े भाई श्रीराम से बहुत प्यार करते हैं। वह खुद को अपने बड़े भाई श्रीराम का अनुयायी मानते है और श्रीराम को भगवान की तरह पूजते है। जब भरत जी जंगल में श्रीराम से मिलने जाते हैं, तो श्रीराम की खुशी छिपती नहीं है। अपने भाई से मिलने पर उसके आंसू नहीं रुकते है। भरत जी श्रीराम को अपना स्वामी कहकर अपनी इच्छा व्यक्त करते है। वह अपने भाई की विशेषताओं को बताकर अपनी श्रद्धा और आशा व्यक्त करते है। वन में श्रीराम की परिस्थिति देखकर भरत जी खुद को दोषी मानते है। भरत जी की यह अधीरता उनकी मन श्रीराम के लिए श्रद्धा का परिचायक है।

12:1:7:प्रश्न और अभ्यास:4

'महीं सकल अनरथ कर मूला' पंक्ति द्‍वारा भरत के विचारों-भावों का स्पष्टीकरण कीजिए।

उत्तर - इस भाव यह है की श्रीराम की परिस्थति को देखकर भरत जी खुद को दोषी मानते है। वह विचार करते है की इस

सृष्टि में जो भी कुछ अनर्थ हो रहा है उसके दोषी वही है। वह अपराधबोध के निचे दबे हुए है कि सभी अनर्थ के मूल वही है।

12:1:7:प्रश्न और अभ्यास:5

'फरइ कि कोदव बालि सुसाली। मुकुता प्रसव कि संबुक काली'। पंक्ति में छिपे भाव और शिल्प सौंदर्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - पहली पंक्ति में तुलसीदास जी का भाव यह है कि जैसे मोटे चावल की बालियों में महीन चावल नहीं उगते हैं। तालाब में पाए जाने वाले काले घोंघे मोती पैदा नहीं कर सकते। इसी तरह भरत जी कहते है कि अगर मैं अपनी मां को दोषी ठहरा कर खुद को साधु प्रदर्शित करू तो यह संभव नहीं होगा। मुझे हमेशा कैकेयी का पुत्र कहा जाएगा।

शिल्प सौंदर्य **:-** तुलसीदास जी ने अवधी भाषा का प्रयोग किया है**।** ’कि कोदव ‘अनुप्रास अलंकार है**।** यह चौपाई छंद में लिखा गया है**।** भाषा प्रवाहमयी है इसकी शैली गेय है**।**

पद

12:1:7:प्रश्न और अभ्यास:1

राम के वन-गमन के बाद उनकी वस्तुओं को देखकर माँ कौशल्या कैसा अनुभव करती हैं? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - श्रीराम के वन जाने के बाद माँ कौशल्या उनकी वस्तुएं देखकर भाव-विभोर हो जाती है। श्रीराम के प्रति उनके स्नेह के कारन उनके आंसू छलक पड़ते है। माँ कौशल्या को पुरे राजभवन में सिर्फ श्रीराम ही दिखाई देते है। वह श्रीराम से जुड़ी वस्तुएं देखकर उनको अपने नेत्रों से लगा लेती है। उन्हें जब स्मरण होता है की श्रीराम चौदह वर्ष के लिए उनसे दूर हो गए है तो वह और व्याकुल हो जाती है। वन अपने पुत्र को होने वाले कष्ट को सोचकर वह दुखी हो जाती है और उन्हें खुद की भी सुध नहीं रहती है।

12:1:7:प्रश्न और अभ्यास:2

'रहि चकि चित्रलिखी सी' पंक्ति का मर्म अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - इस पंक्ति में, पुत्र वियोगिनी माता की व्यथा दिखाई देती है। श्रीराम से वियोग के कारण माता कौशल्या दुखी और आहत हैं। वह श्रीराम की वस्तुओं से खुद को बहलाने की कोशिश कर रही है। परन्तु उनका दुःख बढ़ता ही जाता है। वन अपने पुत्र को होने वाले कष्ट को सोचकर वह दुखी हो जाती है और उन्हें खुद की भी सुध नहीं रहती है। श्रीराम के वनवासी जीवन को स्मरण करके वह अवाक् होकर स्थिर हो जाती है जैसे उनके चेहरे पर कोई भाव नहीं है।

12:1:7:प्रश्न और अभ्यास:3

गीतावली से संकलित पद 'राघौ एक बार फिरि आवौ' मैं निहित करुणा और संदेश को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - यह पंक्ति माँ कौशल्या के संदेश को प्रस्तुत करती है जो उन्होंने श्रीराम जी को भेजा है। श्रीराम जी वन जाने से वह बहुत दुखी है परन्तु साथ-साथ श्रीराम का घोड़ा भी बहुत दुखी है। वह सन्देश में श्रीराम से वापस आने का निवेदन करती है। वह अपने लिए नहीं अपितु घोड़े के लिए श्रीराम से वापस आने का निवेदन करती है। श्रीराम जी का घोड़ा भरत

जी के देखभाल करने के बाद भी कमजोर हो गया है। वह श्री राम के वन जाने के कारण विरह में डूब गया है। माँ कौशल्या उसके दुःख को समझती है इसलिए वे कहने के लिए विवश हो जाती हैं कि प्रिय राम तुम लौट आओ मेरे लिए नहीं अपने प्रिय घोड़े के लिए।

12:1:7:प्रश्न और अभ्यास:4

(क) **उपमा अलंकार के दो उदाहरण छाँटिए।**

(ख) उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग कहाँ और क्यों किया गया है? उदाहरण सहित उल्लेख कीजिए।

उत्तर -

(क) उपमा अलंकार के दो उदाहरण-

1. ‘कबहूँ समुझी वनगमन राम को रही चकि चित्रलिखी सी‘- इस पंक्ति में, 'चित्रालिखी सी' में उपमा अलंकार है। राम को अपने पास नहीं पाने पर माता कौशल्या चित्र के स्त्री की भांति स्तब्ध कहदी रहती है। हिलती-डुलती नहीं है।

2. तुलसीदास वह समय कहे ते लागति प्रीति सिखी सी- इस पंक्ति में सिखी सी उपमा अलंकार है। इसमें माता

कौशल्या की स्थिति मोरनी की तरह दिखाई गई है। वर्षा होने पर मोरनी उत्साहित होकर नृत्य करने लगती है। परन्तु जब वह अपने पैरों देखती है तो दुखी होकर रोने लगती है।

(ख) गीतावली के दुसरे पद की पंक्ति “तदपि दिनहिं दिन होत झावरे मनहुं कमल हिमसारे” में उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग हुआ है। इसमें राम के वियोग से दुखी घोड़े के दुःख की तुलना ऐसे कमलों से की गयी है जो बर्फ की मार के कारण मुरझा रहे है। इस प्रकार तुलसीदास जी ने घोड़े की व्यथा को जीवंत कर दिया है।

12:1:7:प्रश्न और अभ्यास:5

पठित पदों के आधार पर सिद्ध कीजिए कि तुलसीदास का भाषा पर पूरा अधिकार था?

उत्तर - तुलसीदास द्वारा रचित छंदों को पढ़ने के बाद यह सिद्ध होता है कि तुलसीदास कई भाषाओं के विद्वान थे। वह संस्कृत, ब्रज और अवधी के ज्ञाता थे। उन्होंने श्रीराम और भरत जी का प्रेम अवधी भाषा में और पद ब्रज भाषा में लिखा

है। दोनों भाषाओं में उत्कृष्ट शब्दों का प्रयोग किया गया है। तुलसीदास जी ने गीतावली की रचना पद शैली में की है। तुलसीदास जी ने अनुप्रास अलंकार का प्रयोग उत्कृष्टता से किया है। कही कही उपमा अलंकार और उत्प्रेक्षा अलंकार का भी प्रयोग किया है।